चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Times of India	18.02.23	8	7-8

'Weed linked to wheat behind virus that stunts paddy'

Kumar Mukesh | TNN

Hisar: A team of scientists from the department of plant pathology, Haryana Agricultural University (HAU), engaged in finding out causes of dwarfism in paddy crops (basmati, non-basmati, hybrid etc.), has found that the disease is not only caused by Southern Rice Black Streaked Dwarf Virus (SRBSDV), but also the Rice Gall Dwarf Virus (RGDV).

Information has also been obtained about whom these two viruses, belonging to the spinareoviridae virus group, have made their host.

HAU vice-chancellor professor BR Kamboj said SRBSDV infection has been found more in this disease and this virus has made Pova Anova, a weed of the Rabi season wheat crop, its host which is a matter of concern. There has not been any instance of this virus infecting the wheat crop. Therefore, if the farmer destroys this weed from the wheat crop, the possibility of this disease in the paddy crop next year will almost end. For this, apart from mechanical methods, farmers can also spray weed killer Clodinafop 200 grams and Matribugene 240 grams per acre, VC said.

VC informed that the varsity's plant pathologist, Vinod Kumar Malik, and biotechnologist Shikha Yadav

ADVICE FOR FARMERS

- Avoid early nursery sowing (before 25th May) and early transplanting (before 25th June)
- Protect nursery from hoppers. For this, use recommended insecticides dinotefuran 20% SG/80 gm or pymetrozin 50% WG/120 gm per acre
- Uproot and destroy affected paddy plants immediately or bury them in soil
- Adopt direct-seeding method of paddy cultivation

regions. This has been confirmed by the use of virus-specific primers and molecular studies of the S4, S9 and S10 segments of the virus. University scientists O P Lathwal, Promil, Mahavir Singh, Rakesh Kharb, Ankit Judd, Sumit Saini, Manjunath, Vishal and Amit Kumar are working on the problem of dwarfism in paddy, VC said.

HAU director of research Jeet Ram Sharma said they were regularly studying the path of the virus. Emphasizing on clean farming, Hawa Singh Saharan, head of the department of plant disease, asked for regular cleaning of

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	18.02.23	5	1-7

एचएयू के इंदिरा गांधी ऑडिटोरियम में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ पर चीफ गेस्ट प्रो. रमेश चंद बोले

100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 ⁰ की वृद्धि रिकॉर्ड की, जिससे धान-गेहूं फसल की पैदावार में 4.5 से 9% तक की कमी

कहा, जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं

भास्कर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में ''जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता'' विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद मुख्य अतिथि थे व नेशनल एग्रीकल्चरल हायर एजुकेशन प्रोजेक्ट (एन.ए.एच.ई.पी) के राष्ट्रीय को-ओर्डिनेटर डॉ. पी. रामासुंदरम, विशिष्ट अतिथि जबकि सम्मेलन की अध्यक्षता एचएयू के वीसी प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की।

मुख्य अतिथि प्रो. रमेश चंद ने कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बल्कि हर घर के बजट को प्रभावित कर रहा है। देश की बढ़ती जनसंख्या जो ज्यादातर कृषि पर निर्भर है, के लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चिंतनीय हो सकते हैं। पिछले 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी रिकॉर्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बरसाती दिनों की संख्या में कमी व घटते जल स्तर के कारण धान-गेहूं फसल चक्र की पैदावार में 4.5 से 9 प्रतिशत तक की कमी हो रही है। जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए न केवल पॉलिसी प्लानर बल्कि

एचएयू में सम्मेलन के दौरान पुस्तक का विमोचन करते मुख्यातिथि।

जलवायु परिवर्तन के कृषि क्षेत्र में होने वाले दुष्प्रभावों से संबंधित बिन्दु बताए

1. जलवायु परिवर्तन व कृषि दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। जहां एक ओर जलवायु परिवर्तन कृषि को प्रभावित कर रहा है, वहीं कृषि की प्रणालियां भी जलवायु को प्रभावित कर रही हैं।
2. कृषि क्षेत्र में उपयुक्त फसल, किस्म का चुनाव व कृषि पद्धतियों का सही इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में बेहतर भूमिका निभा सकता है।
3. कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायक हो सकता है जैसे धान की पराली का प्रबंधन, मिल्लेट फसलों की खेती व संरक्षण खेती की तकनीक का इस्तेमाल।
4. कृषि में होने वाला निवेश जलवायु को प्रभावित

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन वैज्ञानिकों व शोधार्थियों को सीखने व अनुभव साझा करने के लिए मंच प्रदान करेगा : डॉ. वी. रामासुन्दरम

सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि डॉ. वी. रामासुन्दरम ने बदलते जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में छोटी जोत वाले किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए खाद्यान्न एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बनाए रखना जरूरी है। कृषि आधारित प्रबंधन तकनीक जैसे कि जीरो टिलेज, धान की सीधी बिजाई, जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील किस्मों को अपनाकर, फसल विविधिकरण, पोषक तत्व प्रबंधन, लेजर लेवलिंग और सूक्ष्म सिंचाई को अपनाकर, गुणवत्तापूर्ण बीज की व्यवस्था व पशुधन के लिए चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए चारा बैंकों की स्थापना जरूरी है। इस सम्मेलन में डॉ. एसके पाहुजा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। मंच पर उपस्थित जर्मनी से प्रो.

हमारा लक्ष्य कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना : प्रो. काम्बोज

एचएयू के वीसी प्रो. बी. आर काम्बोज ने बताया कि भारत की जनसंख्या के काम का 54.6 प्रतिशत हिस्सा कृषि से जुड़ा हुआ है। कृषि का भारत की कुल जीडीपी में 19.9 प्रतिशत योगदान है। वर्तमान में भारत में कृषि-खाद्यान से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखापन, बाढ़ इत्यादि शामिल है। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन में प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखापन के अनुकूल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का भविष्य आकंलन, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है। एचएयू वैज्ञानिकी व नई तकनीकों से कृषि उत्पादन व उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रतिबध है। इससे पूर्व मुख्यातिथि द्वारा कृषि संबंधित प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया। सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों की पुस्तिका, अनुसंधान पुस्तिका व 'कृषि महाविद्यालय-एक नजर में, पुस्तिका का भी विमोचन किया। अंत में स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा ने उपस्थित अतिथिगणों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	18.02.23	4	1-6

वैज्ञानिकों की सलाह • साफ सफाई और ग्रस्त पौधों को उखाड़ फेंकने से अन्य पौधों को वायरस के प्रकोप से बचा सकते हैं

एचएयू के वैज्ञानिकों की जांच में खुलासा : स्पाइनारियोविरिडे समूह के दो वायरस के कारण धान की फसल में बौनेपन की थी समस्या

भास्कर न्यूज | हिसार

खरीफ 2022 के दौरान हरियाणा में धान के पौधों में बौनेपन की समस्या देखी तो एचएयू के वैज्ञानिकों ने इसके निदान की दिशा में काम किया। इसका प्रकोप सभी किस्मों यानि बासमती, गैर-बासमती, डंकर, पी.आर. में भी देखने को मिला। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वीसी प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने बताया कि धान के पौधों के बौनेपन के पीछे स्पाइनारियोविरिडे वायरस समूह है जिसमें सदर्न राइस ब्लैक स्ट्रीक्ड ड्वार्फ वायरस (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) व राइस गॉल ड्वार्फ वायरस

(आर.जी.डी.वी.) शामिल हैं, जिसके कारण फसल में बीमारी आती है। इनमें आर.जी.डी.वी की तुलना में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का संक्रमण ज्यादा पाया गया। रबी सीजन के खरपतवार में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का स्थानांतरण होना चिंता की बात है, इसे शीघ्र रोका जाना आवश्यक है।

प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि इन वायरस के स्त्रोत को नियंत्रित करने की दिशा में काम करें। एचएयू के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक व बायोटेक्नोलॉजिस्ट डॉ. शिखा यशवीर ने न्यूक्लिक एसिड और कोट प्रोटीन क्षेत्रों में वायरस को डिकोड किया है। इसकी पुष्टि वायरस के लिए विशिष्ट प्राइमरों का प्रयोग व वायरस के एस4, एस9 व एस10 खंडों के आणविक अध्ययनों से हुई। प्राप्त किए गए न्यूक्लियोटाइड अनुक्रम (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) को एन.सी.बी.आई., यू.एस.ए. द्वारा अनुग्रहित किया गया है। वैज्ञानिकों ने पोवा अनोवा में एस.आर.बी.एस.डी.वी. की उपस्थिति पाई है जबकि गेहूं में फिलहाल कोई संक्रमण नहीं है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. लाठवाल, डॉ. प्रमिल, डॉ. महावीर सिंह, डॉ. राकेश खर्ब, अंकित जूड, डॉ. सुमित सैनी, डॉ. मंजुनाथ, डॉ. विशाल व डॉ. अमित कुमार धान में आई बौनेपन की समस्या पर काम कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति ने वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की।

वैज्ञानिकों ने किसानों को दी सलाह

- अगेती नर्सरी बुवाई (25 मई से पहले) और अगेती रोपाई (25 जून से पहले) से बचें।
- नर्सरी को हॉपर्स से बचाना सबसे जरूरी है। इसके लिए अनुशंसित कीटनाशकों डायनोटीफ्यूरान 20 प्रतिशत एस.जी./80 ग्राम अथवा पाइमेट्रोजिन 50 प्रतिशत डब्ल्यू.जी. /120 ग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- प्रभावित धान के पौधों को तुरंत उखाड़ कर नष्ट कर दें या मिट्टी में दबा दें। • धान की खेती की रोपी बिजाई विधि को अपनाएं।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विभिन्न नमूनों की लैब में जांच की, जिसमें दो वायरस की उपस्थिति मिली। कुछ नमूनों में सह-संक्रमण भी मिला। हम वायरस के पथ का नियमित अध्ययन कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक वायरस संक्रमण को रोकने के लिए हर दिशा में काम कर रहे हैं। पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. हवासिंह सहारण ने स्वच्छ खेती पर जोर देते हुए नाली व मेढ़ पर नियमित सफाई करने पर जोर दिया, जिससे वायरस के आगे स्थानांतरण को रोका जा सकता है। डॉ. टोडरमल ने बताया कि पोवा पोइसी फैमिली का खरपतवार है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	18.02.23	5	1-4

आने वाले समय में नहीं जलेगी पराली, किसानों के सामने होंगे कई विकल्प

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। उन्होंने जलवायु परिवर्तन पर कहा कि कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बल्कि हर घर के बजट को प्रभावित कर रहा है। देश की बढ़ती जनसंख्या जो ज्यादातर कृषि पर निर्भर है, के लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चिंतनीय हो सकते हैं।

उन्होंने बताया कि पंजाब और हरियाणा में धान के सीजन में पराली जलाई जाती है मगर सरकार इस दिशा में लगातार काम कर रही है। आने वाले समय में किसानों के पास कई विकल्प होंगे जिससे वह पराली का सदुपयोग कर पाएंगे। प्रो. रमेश चंद ने बताया कि किसानों की गलती का खामियाजा खुद किसान भुगत रहे हैं। क्लाइमेट चेंज साइलेंट किलर है। पिछले 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी रिकार्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बरसाती दिनों की संख्या में कमी व घटते जल स्तर के कारण धान-गेंहू फसल चक्र की पैदावार में 4.5 से 9 प्रतिशत तक की कमी हो रही है।

जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए न केवल पालिसी प्लानर बल्कि कृषकों व आमजन को भी सतर्क रहने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि साइंस को फोर्स की नहीं बल्कि प्रकृति के साथ कदमताल करने की जरूरत है।

- हकृवि में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ पर बोले नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद्र
- किसानों की गलती का खामियाजा किसान ही भुगत रहे, जलवायु परिवर्तन से धान व गेहूं की पैदावार में नौ प्रतिशत तक कमी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में लगी स्टाल का निरीक्षण करते मुख्य अतिथि नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद, कुलपति प्रोफेसर बीआर कांबोज व अन्य। • जागरण

सीखने के लिए मंच प्रदान करेंगे : डा. रामासुंदरम

डा. वी. रामासुन्दरम ने बदलते जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में छोटी जोत वाले किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए खाद्यान्न एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बनाए रखना जरूरी है। कृषि आधारित प्रबंधन तकनीक जैसे कि जीरो टिलेज, धान की सीधी बिजाई, जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील किस्मों को अपनाकर, फसल विविधिकरण, पोषक तत्व प्रबंधन, लेजर लेवलींग और सूक्ष्म सिंचाई को अपनाकर, बीज की व्यवस्था व चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए चारा बैंकों की स्थापना जरूरी है।

कृषि का उत्पादन बढ़ाना लक्ष्य : प्रो. बीआर कांबोज

प्रो. बीआर कांबोज बोज ने बताया कि वर्तमान में भारत में कृषि-खाद्यान से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो चुनौतियां है। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। जर्मनी से प्रो. एड्यू बार्नर, कनाडा से प्रो. रविंद्र छिब्बर ने भी व्याख्यान दिए। इस अवसर पर सम्मलेन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों की पुस्तिका, अनुसंधान पुस्तिका व कृषि महाविद्यालय-एक नजर में पुस्तिका का विमोचन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	18.02.23	2	1-4

धान में बौनेपन की समस्या के कारक दो वायरस खोजे

- चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने छह महीने में ढूंढा हल
- धान फसल में बौनेपन की समस्या के कारक स्फाइनारियोविरिडे समूह के दो वायरस

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) वैज्ञानियों ने धान फसल में बौनेपन की समस्या के कारक दो वायरस खोजे हैं। खरीफ 2022 के दौरान हरियाणा में धान के पौधों में बौनेपन की समस्या देखी गई थी, तभी से एचएयू के वैज्ञानिक इस पर काम कर रहे थे। छह महीने मेहनत के बाद वैज्ञानियों ने धान के पौधों के बौनेपन के पीछे स्फाइनारियोविरिडे वायरस समूह को खोजा है। इसमें सदर्न राइस ब्लैक स्ट्रीक्ड ड्वार्फ वायरस (एसआरबीएसडीवी) व राइस गाल ड्वार्फ वायरस (आरजीडीवी) शामिल हैं जो बीमारी के कारक हैं। इनमें आरजीडीवी की तुलना में एसआरबीएसडीवी का संक्रमण ज्यादा पाया गया है। रबी सीजन के खरपतवार में एसआरबीएसडीवी का स्थानांतरण होना चिंता की बात है जिसे शीघ्र रोका जाना आवश्यक है।

सफेद फूल वाले खरपतवार को नष्ट कर दें किसान

एचएयू के अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने बताया कि धान के पौधों में बौनापन का पता लगाने के लिए विभिन्न नमूनों की लैब में जांच की, जिसमें दो वायरस की उपस्थिती मिली। कुछ नमूनों में सह-संक्रमण भी पाया गया। हम वायरस के पाथ का नियमित अध्ययन कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक वायरस संक्रमण को रोकने के लिए हर दिशा में काम कर रहे हैं।

ऐसे करें फसल का बचाव

खेत में सफेद फूल वाले खरपतवार और सफेद पीठ वाले कीड़े को देखते ही खत्म कर दें। यह वायरस को फैलाने में सहायक है। पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डा. हवासिंह सहारण ने स्वच्छ खेती पर जोर देते हुए नाली व मेढ़ें पर नियमित सफाई करने पर जोर दिया, जिससे वायरस के आगे स्थानांतरण को रोका जा सकता है। डा. टोडरमल ने बताया कि पोवा पोइसी फैमिली का खरपतवार है।

इन वैज्ञानिकों की टीम ने किया काम

विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलाजिस्ट डा. विनोद कुमार मलिक व बायोटेक्नोलाजिस्ट डा. शिखा यशवीर ने न्यूक्लिक एसिड और कोट प्रोटीन क्षेत्रों में वायरस को डिकोड किया है। विधि वैज्ञानिक डा. ओपी लाठवाल, डा. प्रोमिल, डा. महावीर सिंह, डा. राकेश खर्ब, अंकित जूड, डा. सुमित सैनी, डा. मंजुनाथ, डा. विशाल व डा. अमित कुमार धान में आई बौनेपन की समस्या पर काम कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति ने वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की।

किसानों के लिए सलाह

- अगेती नर्सरी बुवाई (25 मई से पहले) और अगेती रोपाई (25 जून से पहले) से बचें।
- नर्सरी को हापर्स से बचाना सबसे जरूरी है। इसके लिए अनुशंसित कीटनाशकों डायनोटीफ्यूरान 20 प्रतिशत एस.जी. / 80 ग्राम और पाइमेट्रोजिन 50 प्रतिशत डब्ल्यूजी / 120 ग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- प्रभावित धान के पौधों को तुरंत उखाड़कर नष्ट कर दें या मिट्टी में दबा दें।- धान की खेती की सीधी बिजाई विधि को अपनाएं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	18.02.23	2	6.8

धान की रोपाई के बजाय सीधी बिजाई से बचेगा एक तिहाई पानी, मिथेन गैस का उत्सर्जन घटेगा

एचएयू के डॉ. आरके बहल ने कृषि क्षेत्र में बदलाव को वक्त की जरूरत बताया

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। एचएयू में चल अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में हिस्सा लेने आए डॉ. आरके बहल का कहना है कि धान के खेत से जो मिथेन गैस निकलती है; उससे भी जलवायु पर असर होता है। धान की रोपाई के बजाय अगर सीधी बिजाई की जाए तो जहां एक तिहाई पानी की बचत होगी, वहीं मिथेन गैस का उत्सर्जन भी कम होगा। खास बात यह है कि इससे धान की उपज पर कोई खास असर नहीं पड़ेगा।

इंटरनेशनल फाउंडेशन फॉर सेस्टेनेबल डेवलेपमेंट इन अफ्रीकी एशिया के संस्थापक व एचएयू के कृषि महाविद्यालय के पूर्व डीन डॉ. आरके बहल जेनेटिक्स के विशेषज्ञ हैं। मूलतः राजस्थान के श्रीगंगानगर निवासी डॉ. आरके बहल जर्मनी, अमेरिका, जापान समेत अब तक 23 देशों के कृषि विशेषज्ञों के साथ विभिन्न सेमिनार में शामिल हो चुके हैं। उन्होंने बताया कि बढ़ती आबादी व खाद्य सुरक्षा में स्थिरता के लिए प्रतिवर्ष अनाजों का 3.76 प्रतिशत उत्पादन बढ़ाना पड़ रहा है। इसके लिए हर फसल में अधिक से अधिक उपज देने वाली प्रजातियों की खोज की जा रही है। जाहिर सी बात है कि अगर उपज बढ़ेगा तो उस वेराइटी की रोगी प्रतिरोधक क्षमता घटेगी। उदाहरण के तौर पर देखें तो गेहूं की सी-591 और सी-306 में रोग प्रतिरोधक क्षमता तो है, लेकिन उपज कम होने के कारण कम किसान ही इनकी बिजाई करते हैं। इसी तरह धान के खेत में पानी की खपत अधिक होती है, इस वजह से मिथेन गैस भी अधिक निकलती है।

इसलिए धान की रोपाई की जगह सीधी बिजाई की विधि अधिक उपयुक्त है। ऐसा करने पर फसल में एक तिहाई पानी की खपत कम होगी। इसके अलावा मीथेन का उत्सर्जन भी घटेगा। इसी प्रकार के कई अन्य उपाय हैं, जिन्हें अपनाना होगा।

प्राकृतिक खेती तीसरे साल लेगी फायदेमंद

डॉ. आरके बहल।

डॉ. आरके बहल ने कहा कि प्राकृतिक खेती को एक साथ सारे किसानों से शुरू कराना खतरनाक हो सकता है। दरअसल यह विधि जीवाश्म कार्बन की उपलब्धता पर निर्भर है। अगर किसी खेत में लगातार तीन साल तक रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग नहीं होगा, तब जाकर वहां पर्याप्त मात्रा में जीवाश्म कार्बन एकत्रित होगा। इसके बाद चौथे साल की फसल का उत्पादन अच्छा होगा। परंतु खेती पर निर्भरता इतनी अधिक है कि चार साल तक किसान इंतजार नहीं कर सकता। इसलिए बेहतर है कि इसे पहले छोटे स्तर पर शुरू कराया जाए। धीरे-धीरे इसका क्षेत्रफल बढ़ाया जाए। खेती की पुरानी विधियां पर्यावरण के अनुकूल थीं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	18.02.23	2	1-5

'जलवायु परिवर्तन से बढ़ा 0.6 डिग्री तक तापमान, 9% तक घटी फसल पैदावार'

एचएयू के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेशचंद्र ने जताई चिंता

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर शुक्रवार को तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ।

बतौर मुख्य अतिथि नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद ने कहा कि बीते 100 साल में देश के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी रिकॉर्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बारिश के दिनों की संख्या में कमी व घटते जलस्तर के कारण धान-गेहूं फसल चक्र की पैदावार में 4.5 से 9 प्रतिशत तक की कमी आई है। जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए न केवल पॉलिसी प्लानर बल्कि कृषकों व आम जनता को भी सतर्क रहने की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बल्कि, हर घर के बजट को प्रभावित कर रहा है। देश की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है और उनके लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चिंतनीय हो सकते हैं। क्योंकि जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे से जुड़े हैं। जहां एक ओर जलवायु परिवर्तन कृषि को प्रभावित कर रहा है।

वहीं कृषि की प्रणालियां जलवायु को प्रभावित कर रही हैं। कृषि क्षेत्र में उपयुक्त फसल, किस्म का चुनाव व कृषि पद्धतियों का सही इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में बेहतर भूमिका निभा सकता है। कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का

एच एयू में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में आरके बहल को सम्मानित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी आर कंबोज एवं अन्य। संवाद

छोटे किसानों और पशुओं के चारे के लिए बनाना होगा बैंक : डॉ. रामासुंदरदम

सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि व नेशनल एग्रीकल्चरल हायर एजुकेशन प्रोजेक्ट (एनएएचईपी) के राष्ट्रीय कोआर्डिनेटर डॉ. पी. रामासुंदरम ने कहा कि हरियाणा का पूरे भारत में खाद्यान उत्पादन में दूसरा स्थान है। प्रदेश में 1.93 लाख छोटे व मध्यम किसान जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हुए हैं। छोटी जोत वाले किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए खाद्यान्न एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बनाए रखना जरूरी है। कृषि आधारित प्रबंधन तकनीक जैसे जीरो टिलेज, धान की सीधी बिजाई, जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील किस्मों को अपनाने, फसल विविधिकरण, पोषक तत्व प्रबंधन, लेजर लेवलिंग और सूक्ष्म सिंचाई के उपाय अपनाने होंगे। गुणवत्तापूर्ण बीज की व्यवस्था व पशुधन के लिए चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए चारा बैंकों की स्थापना जरूरी है।

कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना होगा : प्रो. कांबोज

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि देश में 54.6 प्रतिशत भूमि कृषि से जुड़ी है। देश के कुल जीडीपी में कृषि क्षेत्र का योगदान 19.9 प्रतिशत है। देश में कृषि-खाद्यान से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करने की चुनौती है। जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़, असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन में प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु

डॉ. आरके बहल को सम्मानित किया

इस सम्मेलन में डॉ. एसके पाहुजा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। मंच पर उपस्थित जर्मनी से प्रो. एंड्रयू बॉनर, कनाडा से प्रो. रविंद्र छिब्बर ने भी व्याख्यान दिए। सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों की पुस्तिका, अनुसंधान पुस्तिका व 'कृषि महाविद्यालय-एक नजर में का भी विमोचन किया गया। कृषि महाविद्यालय के रिटायर्ड डीन डॉ. आरके बहल को विदेशी वैज्ञानिकों ने सम्मानित किया। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केवी शर्मा ने उपस्थित अतिथिगणों का धन्यवाद जताया।

अचानक बदले मौसम पर जताई चिंता

मुख्य अतिथि प्रो. रमेश चंद्र ने शुक्रवार की सुबह हुई धुंध व बादलवाही का जिक्र करते हुए कहा कि फरवरी के दूसरे सप्ताह में

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	18.02.23	9	2-6

हकृवि में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ

जलवायु परिवर्तन खेती के साथ हर घर के बजट को कर रहा प्रभावित

अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा जलवायु परिवर्तन, सहनशील फसलों को अपनाना समय की मांग

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बल्कि हर घर के बजट को प्रभावित कर रहा है। देश की बढ़ती जनसंख्या जो ज्यादातर कृषि पर निर्भर है, के लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चिंतनीय हो सकते हैं। यह बात नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद ने कही। प्रो. रमेश चंद बतौर मुख्यातिथि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ अवसर को संबोधित कर रहे थे।

सम्मेलन में नेशनल एग्रीकल्चरल हायर एजुकेशन प्रोजेक्ट (एन.ए.एच.ई.पी) के राष्ट्रीय को-ऑर्डिनेटर डॉ. पी. रामासुंदरम विशिष्ट अतिथि बी.आर. काम्बोज ने की। मुख्यातिथि प्रो. रमेश चंद ने संबोधन में कहा कि पिछले 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी रिकार्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बरसाती दिनों की संख्या में कमी व घटते जल स्तर के कारण धान-गेहूं फसल चक्र की पैदावार रहे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए न केवल पॉलिसी प्लानर बल्कि कृषकों व आम जनता को भी सतर्क रहने की जरूरत है।

हिसार। दीप प्रज्जवलित करते मुख्यातिथि प्रो. रमेश चंद व अन्य।

पुस्तिका का विमोचन

सम्मेलन में डॉ. एसके पाहुजा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। मंच पर उपस्थित जर्मनी से प्रो. एंड्रयू बॉर्नर, कनाडा से प्रो. रविंद्र छिब्बर ने भी व्याख्यान दिए। इस अवसर पर सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों की पुस्तिका, अनुसंधान पुस्तिका व कृषि महाविद्यालय-एक नजर में पुस्तिका का भी विमोचन किया। अंत में स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा ने उपस्थित रहे।

खाद्यान्न व पोषण की सुरक्षा व स्थिरता रखना जरूरी

सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि डॉ. वी. रामासुन्दरम ने बदलते जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में छोटी जोत वाले किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए खाद्यान्न एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बनाए रखना जरूरी है। कृषि आधारित प्रबंधन तकनीक जैसे कि जीरो टिलेज, धान की सीधी बिजाई, जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील किस्मों को अपनाकर, फसल विविधिकरण, पोषक तत्व प्रबंधन, लेजर लेवलींग और सूक्ष्म सिंचाई को अपनाकर, गुणवत्तापूर्ण बीज की व्यवस्था व पशुधन के लिए चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए चारा बैंकों की स्थापना जरूरी है। हरियाणा का पूरे भारत में खाद्यान्न उत्पादन में दूसरा स्थान है। प्रदेश में 1.93 लाख छोटे व माध्यम वर्गीय किसान जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हुए हैं।

कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना ही लक्ष्य

विश्वविद्यालय के कुलपति व सम्मेलन के संरक्षक प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि भारत की जनसंख्या के काम का 54.6 प्रतिशत हिस्सा कृषि से जुड़ा हुआ है। कृषि का भारत की कुल जीडीपी में 19.9 प्रतिशत योगदान है। वर्तमान में भारत में कृषि-खाद्यान्न से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखापन, बाढ़ इत्यादि शामिल है। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। जिससे बचने के लिए सभी को सामूहिक प्रयास करने होंगे तथा इसमें कृषि वैज्ञानिकों की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है।

जलवायु परिवर्तन व कृषि दोनों एक दूसरे से जुड़े

संबंधित मुख्य बिन्दु पर चर्चा करते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन व कृषि दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। जहां एक ओर जलवायु परिवर्तन कृषि को प्रभावित कर रहा है वहीं कृषि की प्रणालियां भी जलवायु को व कृषि पद्धतियों का सही इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में बेहतर भूमिका निभा सकता है। कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायक हो सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	18.02.23	12	2-6

हकृवि के वैज्ञानिकों ने की दो वायरसों की पहचान

अब बौने नहीं रहेंगे धान की फसलों के पौधे

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

खरीफ 2022 के दौरान हरियाणा में धान के पौधों में बौनेपन की समस्या देखी गई। इसका प्रकोप सभी किस्मों यानि बासमती, गैर-बासमती, संकर, पी.आर. समूह में पाया गया था। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान फसल में बौनेपन की समस्या के कारक दो वायरस की पहचान कर ली है और इनकी रोकथाम के लिए वैज्ञानिकों ने प्रयास शुरू कर दिए हैं। हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने पत्रकारों से बातचीत में यह जानकारी देते हुए बताया कि धान के पौधों के बौनेपन के पीछे स्पाइनारियोविरिडे वायरस समूह है जिसमें सदर्न राइस ब्लैक स्ट्रीक्ड इवार्फ वायरस (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) व राइस गॉल इवार्फ वायरस शामिल हैं, जो बीमारी के कारक है। इनमें आर.जी.डी.वी की तुलना में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का संक्रमण ज्यादा पाया गया है। रबी सीजन के खरपतवार में एस. आर. बी. एस. डी.वी. का स्थानांतरण होना चिंता की बात है जिसका शीघ्र रोका जाना आवश्यक है। प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों से अति शीघ्र वायरस के स्रोत को नियंत्रित करने की दिशा में काम करें। प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक व बायोटैक्नोलॉजिस्ट डॉ. शिखा यशवीर ने न्यूक्लिक एसिड और कोट प्रोटीन क्षेत्रों में वायरस को डिकोड किया है। इसकी पुष्टि वायरस के लिए विशिष्ट प्राइमरों का प्रयोग व वायरस के एस4, एस9 व एस10 खंडों के आणविक अध्ययनों से हुई है। प्राप्त किए गए न्यूक्लियोटाइड अनुक्रम (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) को एन.सी.बी.आई., यू.एस.ए. द्वारा अनुग्रहित किया गया है। वैज्ञानिकों ने पोवा अनोवा में एस.आर.बी.एस.डी.वी. की उपस्थिति पाई है जबकि गेहूं में फिलहाल कोई संक्रमण नहीं है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विभिन्न नमूनों की लैब में जांच की, जिसमें दो वायरस की उपस्थिति मिली।

कुछ नमूनों में सह-संक्रमण भी पाया गया। हम वायरस के पाथ का नियमित अध्ययन कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक वायरस संक्रमण को रोकने के लिए हर दिशा में काम कर रहे हैं।

किसानों के लिए सलाह

▸▸ धान की अगेती नर्सरी बुवाई (25 मई से पहले) और अगेती रोपाई (25 जून से पहले) से बचें।

▸▸ नर्सरी को हॉपर्स से बचाना सबसे जरूरी है। इसके लिए अनुशंसित कीटनाशकों डायनोटैफ्यूरान 20 प्रतिशत एस.जी. / 80 ग्राम अथवा पाइमेट्रोजिन 50 प्रतिशत डब्ल्यू.जी / 120 ग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें।

▸▸ प्रभावित धान के पौधों को तुरंत उखाड़ कर नष्ट कर दें या मिट्टी में दबा दें।

▸▸ धान की खेती की सीधी बिजाई विधि को अपनाएं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	18.02.23	5	1-5

धान फसल में बौनेपन की समस्या के कारक स्पाइनारियोविरिडे समूह के दो वायरस : प्रो. काम्बोज

हिसार, 17 फरवरी (विरेंद्र वर्मा) : खरीफ 2022 के दौरान हरियाणा में धान के पौधों में बौनेपन की समस्या देखी गई। इसका प्रकोप सभी किस्मों यानि बासमती, गैर-बासमती, संकर, पी.आर. समूह में पाया गया था। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने बताया धान के पौधों के बौनेपन के पीछे स्पाइनारियोविरिडे वायरस समूह है जिसमें सदर्न राइस ब्लैक स्ट्रीकड ड्वार्फ वायरस (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) व राइस गॉल ड्वार्फ वायरस (आर.जी.डी.वी.) शामिल हैं जो बीमारी के कारक है। इनमें आर.जी.डी.वी की तुलना में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का संक्रमण ज्यादा पाया गया है। रबी सीजन के खरपतवार में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का स्थानांतरण होना चिंता की बात है

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वायरस खोजने वाली वैज्ञानिकों की टीम के साथ व (दाएं) खरपतवार पोवा अनोवा।

जिसका शीघ्र रोका जाना आवश्यक है। प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि अति शीघ्र वायरस के स्त्रोत को नियंत्रित करने की दिशा में काम करें। विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक व बायोटैक्नोलॉजिस्ट डा. शिखा यशवीर ने न्यूक्लिक एसिड और कोट प्रोटीन क्षेत्रों में वायरस को डिकोड किया है। इसकी पुष्टि वायरस के लिए विशिष्ट प्राइमरों का प्रयोग व वायरस के एस4, एस9 व एस10 खंडों के आणविक अध्ययनों से हुई है। प्राप्त किए गए न्यूक्लियोटाइड अनुक्रम (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) को एन.सी.बी.आई., यू.एस.ए. द्वारा अनुग्रहित किया गया है। वैज्ञानिकों ने पोवा अनोवा में एस.आर.बी.एस.डी.वी. की उपस्थिती पाई है जबकि गेहूं में फिलहाल कोई संक्रमण नहीं है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विभिन्न नमूनों की लैब में जांच की, जिसमें दो वायरस की उपस्थिती मिली। कुछ नमूनों में सह-संक्रमण भी पाया गया। हम वायरस के पाथ का नियमित अध्ययन कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक वायरस संक्रमण को रोकने के लिए हर दिशा में काम कर रहे हैं। पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. हवा सिंह सहारण ने स्वच्छ खेती पर जोर देते हुए नाली व मेढ़े पर नियमित सफाई करने पर जोर दिया, जिससे वायरस के आगे स्थानांतरण को रोका जा सकता है। डॉ. टोडरमल ने बताया कि पोवा पोइसी फैमिली का खरपतवार है जिसे यांत्रिक विधियों के साथ-साथ खरपतवारनाशकों के मिश्रण (क्लोडिनाफोप 200 ग्राम व मैटरीब्यूजोन 240 ग्राम प्रति एकड़) से नियंत्रित किया जा सकता है।

किसानों के लिए सलाह : अगेती नर्सरी बुवाई (25 मई से पहले) और अगेती रोपाई (25 जून से पहले) से बचें। नर्सरी को हॉपर्स से बचाना सबसे जरूरी है। इसके लिए अनुशंसित कीटनाशकों डायनोटीफ्यूरान 20 प्रतिशत एस.जी. / 80 ग्राम अथवा पाइमेट्रोजिन 50 प्रतिशत डब्ल्यू.जी. / 120 ग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें। प्रभावित धान के पौधों को तुरंत उखाड़ कर नष्ट कर दें या मिट्टी में दबा दें।धान की खेती की सीधी बिजाई विधि को अपनाएं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	18.2.23	10	6-8

हमारा लक्ष्य कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना : डॉ. वी. रामासुन्दरम

हिसार, 17 फरवरी (विरेंद्र वर्मा): सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि डॉ. वी. रामासुन्दरम ने बदलते जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में छोटी जोत वाले किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए खाद्यान्न एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बनाए रखना जरूरी है। कृषि आधारित प्रबंधन तकनीक जैसे कि जीरों टिलेज, धान की सीधी बिजाई, जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील किस्मों को अपनाकर, फसल विविधिकरण, पोषक तत्व प्रबंधन, लेजर लेवलींग और सूक्ष्म सिंचाई को अपनाकर, गुणवत्तापूर्ण बीज की व्यवस्था व पशुधन के लिए चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए चारा बैंकों की स्थापना जरूरी है। हरियाणा का पूरे भारत में खाद्यान उत्पादन में दूसरा स्थान है। प्रदेश में 1.93 लाख छोटे व मध्यम वर्गीय किसान जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हुए है। यह

मुख्यातिथि प्रो. रमेश चंद व अन्य दीप प्रज्वलित करते हुए।

सम्मेलन अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों व शोधार्थियों को आपस में जोड़ने, सीखने व अनुभव सांझा करने के लिए मंच प्रदान करेगा। विश्वविद्यालय के कुलपति व सम्मेलन के संरक्षक प्रो. वी. आर काम्बोज ने बताया कि भारत की जनसंख्या के काम का 54.6 प्रतिशत हिस्सा कृषि से जुड़ा हुआ है। कृषि का भारत की कुल जीडीपी में 19.9 प्रतिशत योगदान है। वर्तमान में भारत में कृषि-खाद्यान से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो चुनौतियां है। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तम हिन्दू	18.02.2023	-------	--------

हकृवि में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ

जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं : प्रो. रमेश चंद

उत्तम हिन्दू न्यूज नेटवर्क4
हिसार/सुखविन्दर कौर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि में खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद मुख्य अतिथि थे व नेशनल एग्रीकल्चरल हायर एजुकेशन प्रोजेक्ट (एन.ए.एच.ई.पी) के राष्ट्रीय को-ऑर्डिनेटर डॉ. पी. रामासुंदरम, विशिष्ट अतिथि जबकि सम्मेलन की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की।

मुख्यातिथि प्रो. रमेश चंद व अन्य दीप प्रज्जवलित करते हुए।

मुख्य अतिथि प्रो. रमेश चंद ने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बल्कि हर घर के बजट को प्रभावित कर रहा है। देश की बढ़ती जनसंख्या जो ज्यादातर कृषि पर निर्भर है, के लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चिंतनीय हो सकते है। पिछले 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी रिकार्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बरसाती दिनों की संख्या में कमी व घटते जल स्तर के कारण धान-गेहू फसल चक्र की पैदावार में 4.5 से 9 प्रतिशत तक की कमी हो रही है। जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए न केवल पॉलिसी प्लानर बल्कि कृषकों व आम जनता को भी सतर्क रहने की जरूरत है।

सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि डॉ. वी. रामासुन्दरम ने बदलते जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में छोटी जोत वाले किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए खाद्यान्न एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बनाए रखना जरूरी है। विश्वविद्यालय के कुलपति व सम्मेलन के संरक्षक प्रो. बी. आर. काम्बोज ने बताया कि भारत की जनसंख्या के काम का 54.6 प्रतिशत हिस्सा कृषि से जुड़ा हुआ है। कृषि का भारत की कुल जीडीपी में 19.9 प्रतिशत योगदान है। वर्तमान में भारत में कृषि-खाद्यान में जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो चुनौतियां है। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय वैज्ञानिकी व नई तकनीकों से कृषि उत्पादन व उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रतिबध है। इससे पूर्व मुख्यातिथि द्वारा कृषि संबंधित प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
डेमोक्रेटिक	17.02.2023	-------	--------

जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं : प्रो. रमेश चंद

◆हकृवि में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ

डेमोक्रेटिक फ्रंट

हिसार/पवन सैनी. चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में ''जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि में खाद्य सुरक्षा और स्थिरता'' विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद मुख्य अतिथि थे व नेशनल एग्रीकल्चरल हायर एजुकेशन प्रोजेक्ट (एन.ए.एच.ई.पी) के राष्ट्रीय को-ओर्डिनेटर डॉ. पी. रामासुंदरम, विशिष्ट अतिथि जबकि सम्मेलन की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। मुख्य अतिथि प्रो. रमेश चंद ने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बल्कि हर घर के बजट को प्रभावित कर रहा है। देश की बढ़ती जनसंख्या जो ज्यादातर कृषि पर निर्भर है, के लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चिंतनीय हो सकते हैं। पिछले 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी रिकार्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बरसाती दिनों की संख्या में कमी व घटते जल स्तर के कारण धान-गेंहू फसल चक्र की पैदावार में 4.5 से 9 प्रतिशत तक की कमी हो रही है। जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए न केवल पॉलिसी प्लानर बल्कि कृषकों व आम जनता को भी सतर्क रहने की जरूरत है। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के कृषि क्षेत्र में होने वाले दुष्प्रभावों से संबंधित मुख्य बिन्दु बताए:-

1. जलवायु परिवर्तन व कृषि दोनों एक दूसरे से जुड़े है। जहां एक ओर जलवायु परिवर्तन कृषि को प्रभावित कर रहा है वहीं कृषि की प्रणालियां भी जलवायु को प्रभावित कर रही हैं।

2. कृषि क्षेत्र में उपयुक्त फसल, किस्म का चुनाव व कृषि पद्धतियों का सही इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में बेहतर भूमिका निभा सकता है। 3. कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायक हो सकता है जैसे धान की पराली का प्रबंधन, मिश्रित फसलों की खेती व संरक्षण खेती की तकनीक का इस्तेमाल। 4. कृषि में होने वाला निवेश जलवायु को प्रभावित करता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	17.02.2023	-------	--------

धान फसल में बौनेपन की समस्या के कारक स्पाइनारियोविरिडे समूह के दो वायरसः प्रो. काम्बोज

रबी सीजन के खरपतवार में वायरस का स्थानांतरण होना चिंता का विषय

पत्रकारा वार्ता को सम्बोधित करते हुए एचएयू कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज।

किसानों के लिए सलाह

- अगेती नर्सरी बुवाई (25 मई से पहले) और अगेती रोपाई (25 जून से पहले) से बचें।
- नर्सरी को हॉपर्स से बचाना सबसे जरूरी है। इसके लिए अनुशंसित कीटनाशकों डायनोटीफ्यूरान 20 प्रतिशत एस.जी. / 80 ग्राम अथवा पाइमेट्रोजिन 50 प्रतिशत डब्ल्यू.जी. / 120 ग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- प्रभावित धान के पौधों को तुरंत उखाड़ कर नष्ट कर दें या मिट्टी में दबा दें।
- धान की खेती की सीधी बिजाई विधि को अपनाएं।

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 17 फरवरी : खरीफ 2022 के दौरान हरियाणा में धान के पौधों में बौनेपन की समस्या देखी गई। इसका प्रकोप सभी किस्मों यानि बासमती, गैर-बासमती, संकर, पी.आर. समूह में पाया गया था। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने आज एक प्रैस कांफ्रैंस करके बताया कि धान के पौधों के बौनेपन के पीछे स्पाइनारियोविरिडे वायरस समूह है जिसमें सदर्न राइस ब्लैक स्ट्रीक्ड ड्वार्फ वायरस (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) व राइस गॉल ड्वार्फ वायरस (आर.जी.डी.वी.) शामिल हैं जो बीमारी के कारक है। इनमें आर.जी.डी.वी की तुलना में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का संक्रमण ज्यादा पाया गया है। रबी सीजन के खरपतवार में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का स्थानांतरण होना चिंता की बात है जिसका शीघ्र रोका जाना आवश्यक है। प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि अति शीघ्र वायरस के स्त्रोत को नियंत्रित करने की दिशा में काम करें। विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डा. विनोद कुमार मलिक व बायोटैक्नोलॉजिस्ट डा. शिखा यशवीर ने न्यूक्लिक एसिड और कोट प्रोटीन क्षेत्रों में वायरस को डिकोड किया है। इसकी पुष्टि वायरस के लिए विशिष्ट प्राइमरों का प्रयोग व वायरस के एस4, एस9 व एस10 खंडों के आणविक अध्ययनों से हुई है। प्राप्त किए गए न्यूक्लियोटाइड अनुक्रम (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) को एन.सी.बी.आई., यू.एस.ए. द्वारा अनुग्रहित किया गया है। वैज्ञानिकों ने पोवा अनोवा में एस.आर.बी.एस.डी.वी. की उपस्थिती पाई है जबकि गेहूं में फिलहाल कोई संक्रमण नहीं है। अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने बताया कि विभिन्न नमूनों की लैब में जांच की, जिसमें दो वायरस की उपस्थिती मिली। कुछ नमूनों में सह-संक्रमण भी पाया गया। हम वायरस के पाथ का नियमित अध्ययन कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक वायरस संक्रमण को रोकने के लिए हर दिशा में काम कर रहे हैं। पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डा. हवासिंह सहारण ने स्वच्छ खेती पर जोर देते हुए नाली व मेंढ़े पर नियमित सफाई करने पर जोर दिया, जिससे वायरस के आगे स्थानांतरण को रोका जा सकता है। डा. टोडरमल ने बताया कि पोवा पोइसी फैमिली का खरपतवार है जिसे यांत्रिक विधियों के साथ-साथ खरपतवारनाशकों के मिश्रण (क्लोडिनाफोप 200 ग्राम व मैटरीब्यूजीन 240 ग्राम प्रति एकड़) से नियंत्रित किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डा. ओ.पी. लाठवाल, डा. प्रोमिल, डा. महावीर सिंह, डा. राकेश खर्ब, अंकित जूड, डा. सुमित सैनी, डा. मंजुनाथ, डा. विशाल व डा. अमित कुमार धान में आई बौनेपन की समस्या पर काम कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति ने वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष	17.02.2023	-------	--------

परिवार की धुरी है महिलाएं, उन्हें आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन की जरूरत : संतोष कुमारी

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 17 फरवरी : महिला परिवार की धुरी है। जिस पर हर सदस्य का कार्यभार टिका है। इसलिए हमें हर क्षेत्र में महिलाओं व लड़कियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। जो महिला औद्योगिक क्षेत्र में अपना हाथ अजमा रही है तो वे उद्यमिता सशक्तिकरण की मिसाल है। ऐसी महिलाओं को अपने उत्पाद को बढ़ाने के लिए नवीनतम तकनीकों के साथ उच्च स्तर की सामग्री का इस्तेमाल करना चाहिए। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कैंपस स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी ने कहे। जो गांव डोभी में इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा आयोजित ग्रामीण कार्य अनुभव कार्यक्रम के समापन पर मुख्यातिथि के तौर पर मौजूद रही। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि गृह-विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. मंजू महता ने बताया कि ग्रामीण कार्य अनुभव कार्यक्रम के माध्यम से महिलाओं को अर्जित ज्ञान का लाभ उठाना चाहिए। ताकि वे अपने निर्मित उत्पाद को बढ़ा सकें। इसके लिए ऐसी महिलाओं को गृह-विज्ञान महाविद्यालय के साथ तालमेल बढ़ाने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में गृह-विज्ञान महाविद्यालय की डॉ. निशा आर्य, डॉ. वंदना वर्मा, डॉ. इला रानी, डॉ. उर्वशी नांदल, डॉ. प्रोमिला, डॉ. सुमन सोढ़ी की देखरेख में बीएसी कम्युनिटी साइंस की अंतिम वर्ष की 60 छात्राओं ने 30 दिन तक कार्यक्रम का संचालन किया। इस कार्यक्रम के समापन समारोह में भारी संख्या में महिलाएं, गुरुकुल की छात्राएं, जिला परिषद, ब्लॉक समिति एवं ग्राम पंचायत के सदस्य, युवा संगठन, महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाएं सहित गांव की सरकारी कॉलेज की छात्राएं शामिल हुई। गुरुकुल की छात्राओं ने बेहतरीन योग की मुद्राओं की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में विभिन्न उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगाई। साथ ही कार्यक्रम में विशिष्ट योगदान देने पर स्वयं सहायता समूह एवं 11 ग्रामीण महिलाओं को सम्मानित भी किया। इस अवसर पर शहीद परिवार से कुलवंत सिंह, जयबीर, तृप्ता बैनीवाल, खुशबू, समाज सेविका केला देवी, विकास गोदारा, शिव उपस्थित थे। गांव के सरपंच आजाद हिंदुस्तानी ने सभी का आभार जताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज समाज	18.02.2023	--------	---------

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन वैज्ञानिकों, व शोधार्थियों को सीखने व अनुभव साझा करने के लिए मंच प्रदान करेगा : डॉ. वी. रामासुन्दरम

पुस्तक का विमोचन के दौरान मुख्यातिथि प्रो. रमेश चंद व अन्य। आज समाज

- जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे है : प्रो. रमेश चंद
- हकृवि में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारम्भ

प्रवीन कुमार

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में खाद्य-जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद मुख्य अतिथि थे व नेशनल एग्रीकल्चरल हायर एजुकेशन प्रोजेक्ट (एन.ए.एच.ई.पी) के राष्ट्रीय को-ऑर्डिनेटर डॉ. वी. रामासुन्दरम, विशिष्ट अतिथि जबकि सम्मेलन की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की।

मुख्य अतिथि प्रो. रमेश चंद ने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बल्कि हर पहलू के बाजार को प्रभावित कर रहा है। देश की बढ़ती जनसंख्या जो ज्यादातर कृषि पर निर्भर है, के लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चिंतनीय हो सकते हैं।

पिछले 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी रिकार्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बरसाती दिनों की संख्या में कमी व पाले जाल मगर के कारण धान-गेहूं फसल चक्र की पैदावार में 4.5 से 9 प्रतिशत तक की कमी हो रही है।

जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए न केवल परिवर्तित व्यवहार वाले कृषकों व आम जनता को भी सजग रहने की जरूरत है। सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि डॉ. वी. रामासुन्दरम ने बदलते जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में छोटी जोत वाले किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए, खाद्यान्न एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बनाए रखना जरूरी है।

कृषि आधारित प्रबंधन तकनीक जैसे कि जीरो टिलेज, धान की सीधी बिजाई, जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील किस्मों को अपनाकर, फसल विविधीकरण, पोषक तत्व प्रबंधन, लेजर लेवलिंग और सूक्ष्म सिंचाई को अपनाकर, गुणवत्तापूर्ण बीज की व्यवस्था व पशुधन के लिए चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए चारा बैंकों की स्थापना जरूरी है। हरियाणा का पूरे भारत में खाद्यान्न उत्पादन में दूसरा स्थान है। प्रदेश में 1.93 लाख छोटे व मध्यम वर्गीय किसान जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हुए हैं। यह सम्मेलन अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों व शोधार्थियों को आपस में जोड़ने, सीखने व अनुभव साझा करने के लिए मंच प्रदान करेगा।

जलवायु परिवर्तन के कृषि क्षेत्र में होने वाले दुष्प्रभावों से संबंधित मुख्य बिन्दु बताए

1. जलवायु परिवर्तन व कृषि दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। जहां एक ओर जलवायु परिवर्तन कृषि को प्रभावित कर रहा है वहीं कृषि की प्रक्रियाएं भी जलवायु को प्रभावित कर रही हैं।
2. कृषि क्षेत्र में उपयुक्त फसल, किस्म का चुनाव व कृषि पद्धतियों का सही इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में बेहतर भूमिका निभा सकता है।
3. कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीकों का इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायक हो सकता है जैसे धान की पराली का प्रबंधन, मिलेट फसलों की खेती व संरक्षण खेती की तकनीक का इस्तेमाल।
4. कृषि में होने वाला निवेश जलवायु को प्रभावित करता है।

हमारा लक्ष्य कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना : प्रो. बी. आर काम्बोज

विश्वविद्यालय के कुलपति व सम्मेलन के संरक्षक प्रो. बी. आर काम्बोज ने बताया कि भारत की जनसंख्या के काम का 54.6 प्रतिशत हिस्सा कृषि से जुड़ा हुआ है। कृषि का भारत की कुल जीडीपी में 19.9 प्रतिशत योगदान है। वर्तमान में भारत में कृषि-खाद्यान्न से जुड़ी हुई चीजों के सामने दो चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। अप्रत्याशित बदलाव से कृषि उत्पादन में नुकसान होता है। उन्होंने जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियां जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रोधी किस्में, फसल विविधीकरण, मौसम का सटीक आकलन, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रणाली को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय वैज्ञानिकों द्वारा नई तकनीकों से कृषि उत्पादन व उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। इससे पूर्व मुख्यातिथि द्वारा कृषि संबंधित प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया।

इस सम्मेलन में डॉ. एस.के. पाहुजा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। मंच पर इंग्लैंड से प्रो. पद्दू, कनाडा से प्रो. रविंद्र ने भी संबोधन दिया। इस अवसर पर सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों की पुस्तिका, अनुसंधान पुस्तिका व प्रकृति पुस्तिका का भी विमोचन किया। अंत में [illegible] ने उपस्थित अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
डेली हिसार	18.02.2023	-------	--------

जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं : प्रो. रमेश चंद

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में ''जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि में खाद्य सुरक्षा और स्थिरता'' विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद मुख्य अतिथि थे व नेशनल एग्रीकल्चरल हायर एजुकेशन प्रोजेक्ट (एन.ए.एच.ई.पी.) के राष्ट्रीय को-ऑर्डिनेटर डॉ. पी. रामासुंदरम विशिष्ट अतिथि जबकि सम्मेलन की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की।

मुख्य अतिथि प्रो. रमेश चंद ने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बल्कि हर पक्ष के बजट को प्रभावित कर रहा है। देश की बढ़ती जनसंख्या जो ज्यादातर कृषि पर निर्भर है, के लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चिंतनीय हो सकते हैं। पिछले 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी रिकार्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बारसाती दिनों की संख्या में कमी व घटते जल स्तर के कारण धान गेहूं फसल चक्र की पैदावार में 4.5 से 9 प्रतिशत तक की कमी हो रही है। जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए किसान, पॉलिसी प्लानर, कृषि कृषकों व आम जनता को सतर्क रहने की जरूरत है।

कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना: प्रो. काम्बोज

विश्वविद्यालय के कुलपति व सम्मेलन के संरक्षक प्रो. बी. आर काम्बोज ने बताया कि भारत की जनसंख्या के करीब 54.6 प्रतिशत हिस्सा कृषि से जुड़ा हुआ है। कृषि का भारत की कुल जीडीपी में 19.9 प्रतिशत योगदान है। वर्तमान में भारत में कृषि-खाद्यान से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो चुनौतियां है। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखापन, बाढ़ इत्यादि शामिल है। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन में प्रभाव डालता है।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन वैज्ञानिकों, व शोधार्थियों को सीखने व अनुभव लिए मंच प्रदान करेगा : डॉ. पी. रामासुन्दरम

सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि डॉ. पी. रामासुन्दरम ने बदलते जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में छोटी जोत वाले किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए खाद्यान्न एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बनाए रखना जरूरी है। कृषि आधारित प्रबंधन तकनीक जैसे कि जीरो टिलेज, धान की सीधी बिजाई, जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील किस्मों को अपनाकर, फसल विविधिकरण, पोषक तत्व प्रबंधन, लेजर लेवलिंग और सूक्ष्म सिंचाई को अपनाकर, गुणवत्तापूर्ण बीज की व्यवस्था व पशुधन के लिए चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए चारा बैंकों की स्थापना जरूरी है। हरियाणा का पूरे भारत में खाद्यान्न उत्पादन में दूसरा स्थान है। प्रदेश में 1.63 लाख छोटे व मध्यम वर्गीय किसान जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हुए है। यह सम्मेलन अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों व शोधार्थियों को आपस में जोड़ने, सीखने व अनुभव साझा करने के लिए मंच प्रदान करेगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	18.02.23	5	1-7

एचएयू के इंदिरा गांधी ऑडिटोरियम में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ पर चीफ गेस्ट प्रो. रमेश चंद बोले

100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 ^{0} की वृद्धि रिकॉर्ड की, जिससे धान-गेहूं फसल की पैदावार में 4.5 से 9% तक की कमी

कहा, जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में "जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता" विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद मुख्य अतिथि थे व नेशनल एग्रीकल्चरल हायर एजुकेशन प्रोजेक्ट (एन.ए.एच.ई.पी) के राष्ट्रीय को-ऑर्डिनेटर डॉ. पी. रामासुंदरम, विशिष्ट अतिथि जबकि सम्मेलन की अध्यक्षता एचएयू के वीसी प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की।

मुख्य अतिथि प्रो. रमेश चंद ने कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बल्कि हर घर के बजट को प्रभावित कर रहा है। देश की बढ़ती जनसंख्या जो ज्यादातर कृषि पर निर्भर है, के लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चिंतनीय हो सकते हैं। पिछले 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी रिकॉर्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बरसाती दिनों की संख्या में कमी व घटते जल स्तर के कारण धान-गेहूं फसल चक्र की पैदावार में 4.5 से 9 प्रतिशत तक की कमी हो रही है। जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए न केवल पॉलिसी प्लानर बल्कि कृषकों व आम जनता को भी सतर्क रहने की जरूरत है।

एचएयू में सम्मेलन के दौरान पुस्तक का विमोचन करते मुख्यातिथि।

जलवायु परिवर्तन के कृषि क्षेत्र में होने वाले दुष्प्रभावों से संबंधित बिन्दु बताए

1. जलवायु परिवर्तन व कृषि दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। जहां एक ओर जलवायु परिवर्तन कृषि को प्रभावित कर रहा है, वहीं कृषि की प्रणालियां भी जलवायु को प्रभावित कर रही हैं।
2. कृषि क्षेत्र में उपयुक्त फसल, किस्म का चुनाव व कृषि पद्धतियों का सही इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में बेहतर भूमिका निभा सकता है।
3. कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायक हो सकता है जैसे धान की पराली का प्रबंधन, मिल्लेट फसलों की खेती व संरक्षण खेती की तकनीक का इस्तेमाल।
4. कृषि में होने वाला निवेश जलवायु को प्रभावित करता है।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन वैज्ञानिकों व शोधार्थियों को सीखने व अनुभव साझा करने के लिए मंच प्रदान करेगा : डॉ. वी. रामासुन्दरम

सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि डॉ. वी. रामासुन्दरम ने बदलते जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में छोटी जोत वाले किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए खाद्यान्न एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बनाए रखना जरूरी है। कृषि आधारित प्रबंधन तकनीक जैसे कि जीरो टिलेज, धान की सीधी बिजाई, जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील किस्मों को अपनाकर, फसल विविधिकरण, पोषक तत्व प्रबंधन, लेजर लेवलिंग और सूक्ष्म सिंचाई को अपनाकर, गुणवत्तापूर्ण बीज की व्यवस्था व पशुधन के लिए चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए चारा बैंकों की स्थापना जरूरी है। इस सम्मेलन में डॉ. एस्के पाहुजा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। मंच पर उपस्थित जर्मनी से प्रो. एंड्रयू बॉर्नर, कनाडा से प्रो. रविंद्र छिब्बर ने भी व्याख्यान दिए।

हमारा लक्ष्य कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना : प्रो. काम्बोज

एचएयू के वीसी प्रो. बी. आर काम्बोज ने बताया कि भारत की जनसंख्या के कॉम का 54.6 प्रतिशत हिस्सा कृषि से जुड़ा हुआ है। कृषि का भारत की कुल जीडीपी में 19.9 प्रतिशत योगदान है। वर्तमान में भारत में कृषि-खाद्यान से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखापन, बाढ़ इत्यादि शामिल है। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन में प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखापन के अनुकूल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का भविष्य आकलन, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है। एचएयू वैज्ञानिकी व नई तकनीकों से कृषि उत्पादन व उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रतिबध है। इससे पूर्व मुख्यातिथि द्वारा कृषि संबंधित प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया। सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों की पुस्तिका, अनुसंधान पुस्तिका व 'कृषि महाविद्यालय-एक नजर में' पुस्तिका का भी विमोचन किया। अंत में स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा ने उपस्थित अतिथिगणों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	17.02.2023	--------	--------

जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं : प्रो. रमेश चंद

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	17.02.2023	--------	---------

धान में बौनेपन की समस्या के कारक स्पाइना रियोविरिडे समूह के दो वायरस : प्रो. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज़

हिसार, 17 फरवरी। खरीफ 2022 के दौरान हरियाणा में धान के पौधों में बौनेपन की समस्या देखी गई। इसका प्रकोप सभी किस्मों यानि बासमती, गैर-बासमती, संकर, पी.आर. समूह में पाया गया था। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने बताया धान के पौधों के बौनेपन के पीछे स्पाइनारियोविरिडे वायरस समूह है जिसमें सदर्न राइस ब्लैक स्ट्रीक्ड ड्वार्फ वायरस (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) व राइस गॉल ड्वार्फ वायरस (आर.जी.डी.वी.) शामिल हैं जो बीमारी के कारक है। इनमें आर.जी.डी.वी. की तुलना में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का संक्रमण ज्यादा पाया गया है। रबी सीजन के खरपतवार में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का स्थानांतरण होना चिंता की बात है जिसका शीघ्र रोका जाना आवश्यक है। प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि अति शीघ्र वायरस के स्त्रोत को निर्धारित करने की दिशा में काम करें। विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डा. विनोद कुमार मलिक व बायोटैक्नोलॉजिस्ट डा. शिखा यशवीर ने न्यूक्लिक एसिड और कोट प्रोटीन क्षेत्रों में वायरस को डिकोड किया है। इसकी पुष्टि वायरस के लिए विशिष्ट प्राइमरों का प्रयोग व वायरस के एस4, एस9 व एस10 खंडों के आणविक अध्ययनों से हुई है। प्राप्त किए गए न्यूक्लियोटाइड अनुक्रम को एन.सी.बी.आई., यू.एस.ए. द्वारा अनुमोदित किया गया है। वैज्ञानिकों ने पोवा अनुआ में एस.आर.बी.एस.डी.वी. की उपस्थिति पाई है जबकि गेहूं में फिलहाल कोई संक्रमण नहीं है। अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने बताया कि विभिन्न नमूनों की लैब में जांच की, जिसमें दो वायरस की उपस्थिति मिली। कुछ नमूनों में सह-संक्रमण भी पाया गया। हम वायरस के पथ का नियमित अध्ययन कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक वायरस संक्रमण को रोकने के लिए हर दिशा में काम कर रहे हैं। पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डा. एचएस सहारण ने स्वच्छ खेती पर जोर देते हुए नालों व मेढ़ों पर नियमित सफाई करने पर जोर दिया, जिससे वायरस के आगे स्थानांतरण को रोका जा सकता है। डा. टोडरमल ने बताया कि पोवा पोएसी फैमिली का खरपतवार है जिसे रासायनिक विधियों के साथ साथ खरपतवारनाशकों के मिश्रण (कार्फेन्ट्राजोन 200 ग्राम व मैट्रीब्यूजीन 240 ग्राम प्रति एकड़) से नियंत्रित किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डा. ओ.पी. लाठवाल, डा. प्रोमिल, डा. महावीर सिंह, डा. राकेश चुघ, अंकित जुड़, डा. सुमित सैनी, डा. मंजूनाथ, डा. विशाल व डा. अनिल कुमार धान में आई बौनेपन की समस्या पर काम कर रहे हैं।

किसानों के लिए सलाह

अगेती नर्सरी बुवाई (25 मई से पहले) और अगेती रोपाई (25 जून से पहले) से बचें। नर्सरी को हॉपर्स से बचाना सबसे जरूरी है। इसके लिए अनुशंसित कीटनाशकों डायनोटेफ्यूरान 20 प्रतिशत एस.जी./80 ग्राम अथवा पाइमेट्रोजिन 50 प्रतिशत डब्ल्यू.जी./120 ग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें। प्रभावित धान के पौधों को तुरंत उखाड़ कर नष्ट कर दें या मिट्टी में दबा दें। धान की खेती की सीधी बिजाई विधि को अपनाएं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिन्दुस्थान समाचार	17.02.2023	--------	---------

हिसार : एचएयू में जलवायु परिवर्तन पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

17 Feb 2023 20:08:15

जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को कर रहे प्रभावित : प्रो. रमेश चंद

हिसार, 17 फरवरी (हि.स.)। नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद ने कहा है कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बल्कि हर घर के बजट को प्रभावित कर रहा है। देश की बढ़ती जनसंख्या जो ज्यादातर कृषि पर निर्भर है, के लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चिंताजनक हो सकते हैं।

प्रो. रमेश चंद शुक्रवार को यहां के हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर शुरू हुए तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर नेशनल एग्रीकल्चरल हायर एजुकेशन प्रोजेक्ट (एनएएचईपी) के राष्ट्रीय को-ऑर्डिनेटर डॉ. पी. रामासुंदरम, विशिष्ट अतिथि रहे जबकि सम्मेलन की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने की। मुख्य अतिथि प्रो. रमेश चंद ने कहा कि पिछले 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी दिखाई दी गई है। सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि डॉ. पी. रामासुन्दरम ने बदलते जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में छोटी जोत वाले किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए खाद्यान्न एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बनाए रखना जरूरी है।

हरियाणा का पूरे भारत में खाद्यान्न उत्पादन में दूसरा स्थान है। प्रदेश में 1.33 लाख छोटे व मध्यम वर्गीय किसान जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हुए हैं। यह सम्मेलन अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों व शोधार्थियों को आपस में जोड़ने, सीखने व अनुभव साझा करने के लिए मंच प्रदान करेगा।

इस सम्मेलन में डॉ. एसके पाहुजा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। मंच पर उपस्थित जर्मनी के प्रो. पंकजु बोसेन, कनाडा से प्रो. रविंद्र छिब्बर ने भी व्याख्यान दिए। इस अवसर पर सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों की पुस्तिका, अनुसंधान पुस्तिका व कृषि महाविद्यालय एक नजर में पुस्तिका का भी विमोचन किया गया।

हिन्दुस्थान समाचार/राजेश्वर/सुनील भारद्वाज

	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	17.02.2023	-------	--------

धान फसल में बौनेपन की समस्या के कारक स्पाइनारियोविरिडे समूह के दो वायरसः प्रो.काम्बोज

रबी सीजन के खरपतवार में वायरस का स्थानांतरण होना चिंता का विषय

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। खरीफ 2022 के दौरान हरियाणा में धान के पौधों में बौनेपन की समस्या देखी गई। इसका प्रकोप सभी किस्मों यानि बासमती, गैर-बासमती, संकर, पी.आर. समूह में पाया गया था। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने बताया धान के पौधों के बौनेपन के पीछे स्पाइनारियोविरिडे वायरस समूह है जिसमें सदर्न राइस ब्लैक स्ट्रीक्ड ड्वार्फ वायरस (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) व राइस गॉल ड्वार्फ वायरस (आर.जी.डी.वी.) शामिल हैं जो बीमारी के कारक है। इनमें आर.जी.डी.वी की तुलना में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का संक्रमण ज्यादा पाया गया है। रबी सीजन के खरपतवार में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का स्थानांतरण होना चिंता की बात है जिसका शीघ्र रोका जाना आवश्यक है। प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों से आह्वान

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वायरस खोजने वाली वैज्ञानिकों की टीम के साथ।

किया कि अति शीघ्र वायरस के स्त्रोत को नियंत्रित करने की दिशा में काम करें। विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजिस्ट डा. विनोद कुमार मलिक व बायोटैक्नोलॉजिस्ट डा. शिखा यशवीर ने न्यूक्लिक एसिड और कोट प्रोटीन क्षेत्रों में वायरस को डिकोड किया है। इसकी पुष्टि वायरस के लिए विशिष्ट प्राइमरों का प्रयोग व वायरस के एस4, एस9 व एस10 खंडों के आणविक अध्ययनों से हुई है। प्राप्त किए गए न्यूक्लियोटाइड अनुक्रम (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) को एन.सी.बी.आई., यू.एस.ए. द्वारा अनुमोदित किया गया है। वैज्ञानिकों ने पोआ अनोवा में एस.आर.बी.एस.डी.वी. की उपस्थिती पाई है जबकि गेहूं में फिलहाल कोई संक्रमण नहीं है।

अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने बताया कि विभिन्न नमूनों की लैब में जांच की, जिसमें दो वायरस की उपस्थिती मिली। कुछ नमूनों में सह-संक्रमण भी पाया गया। हम वायरस के पाथ का नियमित अध्ययन कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक वायरस संक्रमण को रोकने के लिए हर दिशा में काम कर रहे हैं। पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डा. हवासिंह सहारण ने स्वच्छ खेती पर जोर देते हुए नाली व मेढ़ पर नियमित सफाई करने पर जोर दिया, जिससे वायरस के आगे स्थानांतरण को रोका जा सकता है। डा. टोडरमल ने बताया कि पोआ गोइनी फैमिली का खरपतवार है जिसे यांत्रिक विधियों के साथ-साथ खरपतवारनाशकों के मिश्रण (क्लोडिनाफोप 200 ग्राम व मैट्रीब्यूजीन 240 ग्राम प्रति एकड़) से नियंत्रित किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डा. ओ.पी. चौधरी, डा. प्रोमिल, डा. महावीर सिंह, डा. राकेश शर्मा, अंकित सूद, डा. सुमित सैनी, डा. मंजूनाथ, डा. विशाल व डा. अमित कुमार धान में आई बौनेपन की समस्या पर काम कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति ने वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की।

किसानों के लिए सलाह

- अगेती नर्सरी बुवाई (25 मई से पहले) और अगेती रोपाई (25 जून से पहले) से बचें।
- नर्सरी को होपर्स से बचाना सबसे जरूरी है। इसके लिए अनुशंसित कीटनाशकों डायनोटैफ्यूरान 20 प्रतिशत एस.जी. / 80 ग्राम अथवा पाइमेट्रोजिन 50 प्रतिशत डब्ल्यू.जी. /120 ग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- प्रभावित धान के पौधों को तुरंत उखाड़ कर नष्ट कर दें या मिट्टी में दबा दें।
- धान की खेती की सीधी बिजाई विधि को अपनाएं।